चौथा संसार, इन्दौर 28 OCT 2010

टंट्या के निमित्त वनवासी गौरव में वृद्धि

मध्यप्रदेश में भारत की सर्वाधिक आदिवासी आबादी निवास करती है। प्रदेश की लगभग एक चौथाई जनसंख्या आदिवासी है। उनके समग्र विकास के बगैर प्रदेश के विकास की बात बेमानी है। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान ने अब तक अपनी विकास यात्राओं को अलग-अलग आयामों से कभी खेत खलियानों में किसानों से जोड़ा तो कभी गाँव चौपालों में ग्रामीण जनता से। इस बार उनकी विकास यात्रा २८ अक्टूबर २०१० से इसी एक चौथाई आबादी वाले आदिवासियों से जुड़कर वनवासी सम्मान यात्रा के रूप में फिर आगे गतिमान होगी। वनवासी सम्मान यात्रा का शुभारम्भ खण्डवा यानी पूर्वी निमाड़ की उस भूमि से होगा जहाँ रॉबिन हुड के नाम से प्रसिद्ध हुए क्रांतिकारी टंट्या भील का जन्म हुआ था। वनवासी क्षेत्र का एक ऐसा क्राँतिकारी जिसने अंग्रेजों और अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ आदिवासियों को एकत्र कर क्रांति का बिगुल बजाया था।

मध्यप्रदेश की अनुसूचित जनजातियों एवं वनवासियों के सम्मान में उनके समग्र विकास के उद्देश्य से मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान पूर्वी निमाड़ के पंधाना तहसील के खालवा विकासखण्ड के ग्राम बड़दा से अपनी वनवासी सम्मान यात्रा की शुरूआत करने जा रहे हैं। यात्रा का प्रथम चरण वनवासी क्षेत्र के एक सौ इक्कीस वर्ष पूर्व देश के इतिहास क्षितिज पर बारह वर्षों तक सतत जगमगाते रहे क्रांतिकारी टंट्या भील को समर्पित है, जो जनजाति के गौरव हैं। वे एक ऐसे जननायक हैं जो वनवासियों के अदम्य साहस, चमत्कारी स्फूर्ति और संगठन शक्ति के प्रतीक हैं। एक ऐसा आदिवासी जननायक जिसे अंग्रेज सरकार इंडियन रॉबिनहुड (जननायक) कहती थी। द न्यूयार्क टाइम्स के १० नवम्बर १८८९ के अंक में टंट्या मामा की गिरफ्तारी की खबर प्रमुखता से प्रकाशित हुई थी। इसमें टंट्या भील को इंडिया का रॉबिन हुड बताया गया था। टंट्या भील का जन्म तत्कालीन सी.पी. प्रांत के पूर्व निमाड़ जिले की पंधाना तहसील के बड़दा गाँव में हुआ था। भीलों के कौशल का प्रतीक टंट्या समाजवादी सपने साकार करने के लिए अंग्रेजों और शोषकों का धन उनका सरकारी खजाना लूट कर जरूरत मंदों और गरीबों में बांट देता था।

छापामार युद्ध कौशल, अचूक निशानेबाज भीलों की पारम्परिक धनुर्विधा में निपुण, जेल के सीखचों को तोड़कर भाग जाने में समर्थ टंट्या का जीवन जंगल, घाटी और अरण्य बीहड़ों ओर पर्वतों में अंग्रेजों और होल्कर राज्य की शक्तिशाली सेना से लोहा लेते हुए बीता। अंग्रेजों ने इस जनमानस को जनविद्रोह के डर से कब और किस तारीख को फाँसी की सजा दी यह गुप्त रखा था। मान्यता है कि फाँसी के बाद उनके शव को इंदौर खण्डवा रेलमार्ग पर स्थित कालापानी (पातालपानी) रेलवे स्टेशन के पास फेंक दिया गया था। वहाँ आज भी एक समाधि बनी है जो लोगों में टंट्या मामा की समाधि के रूप में आस्था और विश्वास की जगह है। लोक मान्यता है अगर कोई ट्रेन वहां नहीं रूकती है तो वह कुछ दूर जाकर स्वमेव रूक जाती है और सलाम करती है। इसीलिए आज भी सभी रेल चालक पातालपानी पर टंट्या मामा को सलामी देने के लिए कुछ क्षण के लिए रेल को रोकते हैं।

वनवासी सम्मान यात्रा

उन्हीं क्रांतिकारी वनवासी जननायक को प्रणाम करती वनवासी सम्मान यात्रा की रेल उनके जन्म स्थल से चलेगी जो अपने प्रथम चरण में निमाड़ से चार जिलों खण्डवा, बुरहानपुर, खरगौन और बड़वानी में अपने पड़ाव डालेगी। वहाँ मुख्यमंत्री इन जिलों के आदिवासी बहुल गांव में रात्रि विश्राम भी करने वाले हैं।

हिन्दुस्तान के नक्शे में विन्ध्य और सतपुड़ा के बीच बसा भू-भाग निमाड़ के नाम से प्रसिद्ध है। निमाड़ व्यवस्था की दृष्टि से दो भागों में बंटा रहा है - एक पूर्वी निमाड़ (खण्डवा) एवं दूसरा पश्चिमी निमाड़ (खरगौन, बड़वानी)। धरती माता के निम्नांचल में बसा होने से इसका नाम निमाड़ है। नीम के पेड़ों की अधिकता भी निमाड़ कहे जाने का कारण मानी जाती है।

इसी निमाड़ के वनवासी टंट्या ने आदिवासियों को एकत्र कर क्रांति का बिगुल बजाया था। मध्यप्रदेश की अनुसूचित जनजातियों एवं वनवासियों के सम्मान में उनके समग्र विकास के उद्देश्य से मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान खण्डवा से प्रदेश की आदिवासी अंचलों के सर्वांगीण विकास का बिगुल बजाने जा रहे हैं जिसके उद्घोष से निकलेगी प्रदेश के विकास में समुदाय की सक्रिय सहभागिता, प्रदेश में वन अधिकार अधिनियम का प्रभावी क्रियान्वयन, शिकायतों और समस्याओं का त्वरित निराकरण और अनुसूचित जनजाति के हितग्राहियों को शासन की विभिन्न योजनाओं का समुचित लाभ सुनिश्चित किए जाने के प्रयास की स्वर लहरी। इस यात्रा के दौरान प्रदेश के आदिवासी अंचलों के चयनित क्षेत्रों का भ्रमण करते हुए मुख्यमंत्री चाहते हैं आदिवासी अंचलों में, जनजातियों के हितलाभ से प्रत्यक्षतः जुड़ी गतिविधियों जैसे दू पात्र हितग्राहियों को वन अधिकारियों को मान्यता, मनरेगा के अंतर्गत मजदूरी का समय पर भुगतान, सार्वजनिक वितरण प्रणाली का विशेषकर दूरस्थ एवं पहुंच विहीन क्षेत्रों में प्रभावी क्रियान्वयन, छात्रावास और आश्रम शालाओं की व्यवस्था, विघालयों और अस्पतालों की सुव्यवस्था, पात्र हितग्राहियों को कपिल धारा के कुएँ एवं मोटरपम्प आदि की स्वीकृति, इंदिरा आवास योजना का लाभ प्रदान करना, पुलिस एवं आबकारी विभाग से संबंधित शिकायतों का निवारण, छात्रवृत्ति और शिष्यवृत्ति प्रदाय, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं आदि महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के संबंध में प्राप्त आवेदनों का निराकरण विशेष रूप से किया जाए, इस बात का ध्यान रखा जाएगा।

लोकोक्तियां बताती है निमाड़ के जंगल, यहाँ के अरण्य वन भी संस्कृति के संदेश वाहक रहे हैं। हरसूद के जंगलों में यदि सोलहवीं शताब्दी के संत सिंगाजी ने अपनी आध्यात्मिक साधना कर के ११०० भजनों के माध्यम से यहाँ के लोक जीवन और लोक भाषा निमाड़ी को सुसंस्कृत और परिष्कृत बनाने में योगदान दिया उसी निमाड़ के वनवासी टंट्या मामा ने राजशाही और अंग्रेजसत्ता से बारह वर्ष तक सशस्त्र संघर्ष किया।

निमाड़ की अपनी अलग पहचान है, एक संस्कृति जो नर्मदा के किनारे-किनारे विकसित हुई। इसका इतिहास समृद्ध है। यहाँ पुरापाषाण युगीन आदिम सभ्यता एवं प्रस्तर युगिन प्रमाण आज भी मौजूद हैं। पौराणिक गाथाओं में ओंकार मान्धाता ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग भी है और असीरगढ़ के जंगलों में भटकते अश्वस्थामा की कथाएं भी। मुमताज महल की यादों से सजा बुरहानपुर भी है और किशोरकुमार का सुमधुर कण्ठ भी। नेपानगर कागज का कारखाना भी है माखनलाल चतुर्वेदी के शब्द भी। यहाँ राम के वनपथगमन के चिन्ह भी। आदिम सभ्यता के साथ-साथ आबोहवा, रीति-रिवाज, रहन-सहन, भाव-भाषा और लोक संस्कृति की समृद्ध परम्पराओं वाली एक खास पहचान भी है जो निमाड़ी संस्कृति कहलाती है। अम्बाड़ी की भाजी और ज्वार की रोटी वाला सोंधा-सोंधा देशी भोजन भी है। अबुल फजल ने निमाड़ के इस जिले के लिए अपने वृतांत में लिखा है कि जिले के मूल निवासी भील, कुनबी और गोंड थे। आज फिर एक नया वृतांत आदिवासी, जनजातीय, वनवासी सम्मान यात्रा के रूप में लिखा जाए जो बरसों-बरस तक वनवासियों को विकास के पथ पर सम्मान देता रहे। यात्रा अपने उद्देश्य में एक तीर्थ यात्रा में बदल जाए, क्या यह हो सकता है? ऐसा हो यही मंगल कामना है।

डा. स्वाति तिवारी

(लेखिका जानी मानी साहित्यकार है)